The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 - 2018

दूरस्थ शिक्षा तथा नियमित शिक्षा के बालकों एवं बालिकाओं में अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

राघवेन्द्र मालवीय*

शोध सार (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन ''दूरस्थ शिक्षा तथा नियमित शिक्षा के बालकों एवं बालिकाओं में अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन'' है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययनकर्ता द्वारा प्रतिदर्शन चयन के एक प्रमुख प्रकार सम्भाविता प्रतिदर्शन की एक प्रमुख विधि साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन के माध्यम से गोरखपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों एवं राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चुना है। स्नातक स्तर के छात्र/ छात्राओं की अध्ययन आदत को मापने के लिए डॉ0 पूर्णिमा श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी से निर्मित स्वाध्याय अभ्याय अनुसूची (Study Habit Inventory) एवं प्रो0 करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण के लिए सह–सम्बन्ध गुणांक आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि दूरस्थ शिक्षा एवं नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में सार्थक एवं धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

सूत्रशब्दः दूरस्थ शिक्षा, नियमित शिक्षा, अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली।

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है। जीवन की उदात्ता, उच्चता, सौन्दर्य और उत्कृष्टता शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। बालक की वैयक्तिक प्रगति, उसका शारीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास तब तक भली प्रकार नही हो सकता जब तक वह शिक्षा ग्रहण न करें।

शिक्षा के विकास की प्रतिस्पर्धात्मक प्रक्रिया में शैक्षिक तकनीकी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। भारत एक कृषि प्रधान एवं विकासशील राष्ट्र है अतः यहाँ पर सामान्य एवं निम्न स्तर के जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। अर्थात् अधिकांशतः महिला एवं पुरुष अपने भरण–पोषण के लिए रोजगार की तलाश में होने के कारण विद्यालय नियमित रूप से नहीं पहुँच पाते है और विद्यालयी शिक्षा (औपचारिक शिक्षा) से उनका सम्बन्ध टूट जाता है। फलतः उनकी औपचारिक शिक्षा पूरी नही हो पाती है।

*जे.आर.एफ., शिक्षाशास्त्र, शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती डीम्ड टू बी. यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

ऐसी स्थिति में औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रूप में मुक्त शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा का आविर्भाव हुआ, जो वर्तमान समय के इस विकासोन्मुखी दौड़ में जीवन व्यतीत करने वाले औपचारिक शिक्षा से वंचित लोगों के लिए वरदान सिद्व हो रही है क्योंकि इस शिक्षा पद्वति में पढ़ने वाले अर्थात अधिगमकर्ता का सम्पर्क नियमित रूप से अध्यापक से नही हो पाता और न ही वह नियमित रूप से विद्यालय जाने को बाध्य होते है। इस प्रकार अधिगमकर्ता अपनी शिक्षा को जारी रख सकता है।

प्रत्येक बालक प्रभावी ढंग से सीखने के लिए अपनी शैली (ढ़ग) विकसित करता है। सीखने के ढंग को अधिगम शैली का नाम दिया जाता है। उक्त वर्णन से काफी सीमा तक यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में बालक सामंजस्य स्थापित करता है अर्थात् अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के निर्धारक के रूप में कार्य करती है।

व्यक्ति या बालक की अधिगम शैली उसकी अध्ययन आदत से प्रभावित होती है। या यूँ कहें कि बालक की अधिगम शैली उसकी अध्ययन आदत से निर्धारित होती है। चूँकि अधिगम शैली से अधिगम योग्यता और अधिगम योग्यता से उपलब्धि प्रभावित होती है। स्पष्ट है कि अध्ययन आदत उपलब्धि को भी प्रभावित कर रही है। उपयुक्त समस्या को समझने के लिए अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में क्या सम्बन्ध है? अनुसंधानकर्त्ता के मन में जिज्ञासा हुई।

प्रायः यह भी देखा जाता है कि व्यक्ति किस प्रकार के समूह में रहता है उसकी तर्क क्षमता, शैली, आदतों, विचारों एवं अन्य क्रियाकलाप भी उसी समूह की शैली, आदतों, तर्क क्षमताओं एवं विचारों आदि के अनुसार हो जाते है। बालक के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक विकास पर तर्क क्षमता का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ता है। इनमें शैली एवं आदतों का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर अधिक पड़ता है। चरित्र को तो शैली एवं आदतों का पुंज कहा जाता है। इसी प्रकार का प्रभाव बालक के शैक्षिक जीवन को भी प्रभावित करता है। अच्छी शैली एवं आदतों के कारण ही उसे ज्ञानोपार्जन में रूचि उत्पन्न होती है। पढ़ने, लिखने, स्मरण में शैली एवं आदतें बहुत सहायक होती है।

चूँकि बालक की अध्ययन आदत परिस्थिति जन्यता और एक निश्चित (उम्र) स्तर के तक बदलती है। इस परिवर्तनशीलता की प्रवृत्ति का इस्तेमाल करके बच्चों की अधिगम शैली तदोपरान्त अधिगम योग्यता में उत्कृष्टता लायी जा सकती है।

शोधकर्ता ने मऊ जनपद पर अध्ययन आदत से प्रभावित है और उसकी अधिगम शैली क्या है? इन्हीं जानकारी हेतु शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध समस्या के रूप में अपनी इच्छा के आधार पर यह समस्या कथन चयनित किया। प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर है। इसको महत्त्व इसलिए दिया गया है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत और अधिगम शैली को जानकर उन्हें अपनी स्ट्रीम कैरियर के सम्बन्ध में स्पष्टता प्राप्त करायी जाए। शिक्षा जगत् भी उन्हें विकास के शैक्षिक, बौद्विक, सामाजिक इत्यादि क्रम प्रदान करना चाहता है।

इस अध्ययन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है जब बालक की अध्ययन आदत का अध्ययन किया जाता है। इसका उपयोग कर बालकों के अन्य व्यवहारों में अभीष्ट परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है और बालकों की विध्वसंक प्रवृत्ति को रचनात्मकता की ओर उन्मुखता/बढ़ावा दिया जा सकता है तथा अनुसंधान का वास्तविक अर्थो में यह उपयोग किया जा सकता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

समस्या कथन

''दूरस्थ शिक्षा तथा नियमित शिक्षा के बालकों एवं बालिकाओं में अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

1. दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययनकर्ता द्वारा प्रतिदर्शन चयन के एक प्रमुख प्रकार सम्भाविता प्रतिदर्शन की एक प्रमुख विधि साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन के माध्यम से गोरखपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों एवं राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चुना है। स्नातक स्तर के छात्र/ छात्राओं की अध्ययन आदत को मापने के लिए डॉ0 पूर्णिमा श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी से निर्मित स्वाध्याय अभ्याय अनुसूची (Study Habit Inventory) एवं प्रो0 करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित अधिगम शैली अनुसूची का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए सह–सम्बन्ध गुणांक आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

''दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।''

सारणी 1.दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य सहम्बन्ध

N	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर	सार्थकता स्तर का मान
100	+0.3366	0.05	0.195

व्याख्या

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि–दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली अनुसूची द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का सह–सम्बन्ध गुणांक +.3366 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है, जो 98 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.195 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। अतः प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक परिमित धनात्मक सह–सम्बन्ध है। जैसे–जैसे उनकी अध्ययन आदत सकारात्मक होगी वैसे–वैसे उनकी अधिगम शैली में भी वृद्धि होगी। अतः अध्ययनकर्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना ''दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही है।'' को निरस्त किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में सार्थक सह–सम्बन्ध है। डेनिज (2013) ने

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

अपने अध्ययन मे पाया कि विद्यार्थियों के अधिगम शैली के विभिन्न आयामों भिन्न दिशाओं में जाना, समावेशी, समझौता एवं अभिमुख का उनके अध्ययन आदत से सहसम्बन्ध पाया गया। नाराहारी एवं तिवारी (2015) ने अध्ययन में पाया कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों को शैक्षिक परामर्श का उनके अध्ययन आदत से उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

"नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।"

सारणी 2.नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य सहम्बन्ध

N	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर	सार्थकता स्तर का मान
100	+0.2331	0.05	0.195

व्याख्या

सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि–नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली अनुसूची द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का सह–सम्बन्ध गुणांक +.2331 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है, जो 98 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.195 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। अतः प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक परिमित धनात्मक सह–सम्बन्ध है। जैसे–जैसे उनकी अध्ययन आदत सकारात्मक होगी वैसे–वैसे उनकी अधिगम शैली में भी वृद्धि होगी। अतः अध्ययनकर्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना "नियमित शिक्षा के बालक– बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही है।" को निरस्त किया जाता है। नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में सार्थक सह–सम्बन्ध है। डेनिज (2013) ने अपने अध्ययन मे पाया कि विद्यार्थियों के अधिगम शैली के विभिन्न आयामों भिन्न दिशाओं में जाना, समावेशी, समझौता एवं अभिमुख का उनके अध्ययन आदत से सहसम्बन्ध पाया गया। नाराहारी एवं तिवारी (2015) ने अध्ययन में पाया कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के विद्यार्थियों को शैक्षिक परामर्श का उनके अध्ययन आदत से उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष

उद्देश्य–1.दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य सह–सम्बन्ध से प्राप्त निष्कर्ष–

निष्कर्ष–दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

उद्देश्य–2.नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य सह–सम्बन्ध से प्राप्त निष्कर्ष

निष्कर्ष–नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

सुझाव

निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि नियमित शिक्षा के बालक–बालिकाओं के अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली दूरस्थ शिक्षा के बालक–बालिकाओं की अपेक्षा उच्च पाया गया। जहाँ दूरस्थ शिक्षा ग्रहण करने वाले

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

बालक–बालिकाएँ किसी अन्य क्षेत्र में लगे रहने के कारण एवं व्यवसायिक कार्यों में संलग्न होने के कारण शिक्षा को नियमित नहीं कर पाते है जिसके उनके अध्ययन आदत एवं अधिगम शैली नियमित नहीं हो पाती है। अतः दूरस्थ शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक–बालिकाओं को शिक्षा के प्रति रुचि रखने की जरूरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. DENIZ, Sabahattin (2013). Analysis Of Study Habits And Learning Styles In University Students, *Ocak 2013 Cilt: 21 No: 1 Kastamonu Eğitim Dergisi 287-302, January 2013 Vol: 21 No:1 Kastamonu Education Journal.*

[2]. Narahari, Bhagavad Gita & Tiwari, Antia (2015)- The Impact of Academic Counseling on Study Habits of Adolescent Students in Indian Government Schools, International Journal of Education and Psychological Research, Vol. 4, Issue 1, March 2015, pp. 1-5.

[3]. Yasmin, Fakhra (2016). The Impact Of Perceptual Learning Styles On Academic Performance Of Masters' Level Education Students, Sci. Int. (Lahore), 28(3), 2953-2958, ISSN 1013-5316; CODEN: SINTE 8 2953 May-June 2016.

[4]. N Radha, Dr. C Muthukumar (2015). Analysis of study habits of college students in Villupuram district, International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 353-356.

[5]. Nzesei, Mutua, Meshack (2015). A Correlation study between Learning Styles and Academic Achievement among Secondary School Students in Kenya, Department of Psychology, University of Nairobi.

[6]. Ghosh & Aditya (2014). Study Habits of Secondary School Students of Working and Non-Working Mothers, *IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS) Volume 19, Issue 10, Ver. I (Oct. 2014), PP 12-15 e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845*. www. iosrjournals.org www.iosrjournals.org, pp. 12-15

[7]. Harrison, Shannie (2013). An Investigation of the Learning styles and Study Habits of Chemistry Under graduates in Barbados and their Effect as Predictors of Academic Achievement in Chemical Group Theory. *ISSN 2239-978X Journal of Educational and Social Research* Vol. 3 (2) May 2013, pp. 107.